कश्मीर के आलंकारिक आचार्य

डॉ. भारतेंदु कुमार पाठक
एवं
डॉ. वनीत कौर

कश्मीर प्राचीन काल से संस्कृति साहित्य व कला का केंद्र रहा है। “कश्मीर को यदि सारस्वत प्रदेश कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। समीक्षा का श्री गणेश यहीं क्यों हुआ? कश्मीर में प्रकृति-सौंदर्य सर्वाधिक है अर्थात् जिस स्थान पर प्रकृति-सौंदर्य होगा, वहाँ कविता आएगी व जब कविता आएगी तो समीक्षा होगी ही होगी?”

आचार्य भामह- इस प्रदेश में प्रथमत: काव्यशास्त्र पर आचार्य भामह ने काव्यालंकार नामक पुस्तक की रचना की थी। काव्यालंकार में आचार्य भामह की अलंकारवादी दृष्टि व्यक्त है। यह ग्रंथ ‘षष्ठ परिच्छेद’ में समाप्त हुआ है। “प्रथम परिच्छेद में काव्य के प्रयोजन, हेतु, लक्षण, भेद इत्यादि सामान्य विषय निरुपित है; द्वितीय में गुण और अलंकार; तृतीय में अलंकार, चतुर्थ में दोष, पंचम में न्याय-विरोधी दोष और षष्ठ में शब्द शुद्धि ।”[1]

आचार्य उद्भट्ट- भामह के पश्चात उद्भट्ट नामक आचार्य ने ‘काव्यालंकार सार संग्रह’ नामक पुस्तक की रचना की। “उद्भट्ट अपने समय के एक मान्य आलंकारिक हैं। इनकी मान्यताओं से प्रभावित एक सम्प्रदाय ही था, जो ओद्भट्ट सम्प्रदाय के नाम से ख्यात हैं।”[2] यह ग्रंथ षष्ठ वर्ग में विभाजित है।

प्रतीहारेन्दुराज- इन्होंने लघुवृत्ति नामक टीका रचकर इस परम्परा को गतिशील रखा। “इन्दुराज प्रणीत यह एक विद्वतापूर्ण एवं महत्वपूर्ण टीका है। कारिकाओं की व्याख्या विलक्षण एवं आकर्षक ढंग से की गई है। भाषा प्रवाहमय एवं प्रांजल है । पद्धति तर्क संगत, तलस्पर्शी एवं लोचदार है । प्रत्येक अलंकार के लक्षण की व्याख्या उसके एक-एक पद की सार्थकता स्पष्ट करते हुए की गई है।”[3] यहाँ यह कहा जा रहा है कि प्रतीहारेन्दुराज ने उद्भट्ट के महत्त्व को कई गुना बढ़ा दिया है ।

आचार्य मुकुल भट्ट- “एक छोटी सी कृति ‘अभिधावृति मात्रिका’ की चर्चा यहाँ अपेक्षित है। इसमें केवल पन्द्रह कारिकाएँ हैं जिनपर कारिकाकार की वृति भी है। कारिकाकार मुकुलभट्ट कल्लट के पुत्र थे।”[4] यह पुस्तक प्रत्यक्षत: शब्द शक्ति पर आधारित है, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से अलंकार समर्थक भी।

आचार्य वामन- “आचार्य वामन राष्ट्रकूट वंश में उत्पन्न काश्मीर-नरेश जयापीड के सभापंडित और मंत्री थे। इन्होंने काव्यालंकार सूत्र नामक ग्रंथ में अलंकारशास्त्र के समस्त सिद्धांतों का विवेचन पांच अधिकरणों में सूत्र रूप में किया है।”[5]

आचार्य रुय्यक- आचार्य रुय्यक ने ‘अलंकार सर्वस्व’ की रचना आलंकारिक परम्परा को गतिशील रखा है । राजानक इनकी उपाधि थी जिस पर आचार्य जयरथ ने विमर्शिनी टीका रची है।

आचार्य महिम भट्ट- "व्यक्ति विवेक मूलतः संस्कृत भाषा में लिखा हुआ एक काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है। इसके रचयिता महिमाचार्य हैं। उनके पिता का नाम धौर्य था और गुरु का श्यामलिक।"[6]

सारांशत: कह सकते हैं कि कश्मीरी आचार्य ने अलंकार तत्व को व्यापक रूप में ग्रहण किया है, जो कालान्तर में ध्वनि, वक्रोक्ति व रस के प्रभाव में संकुचित होता गया है।

संदर्भ-

1. काव्यालंकार – डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ०-01, संस्करण- 2024 बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना।
2. काव्यालंकार सार संग्रह- डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, पृ०-05
3. काव्यालंकार सार संग्रह एवं लघुवृत्ति की व्याख्या- डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, पृ०-41, संस्करण-1966, हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग ।
4. काव्यालंकार- रुद्रट- रामदेव शुक्ल,पृ-42, संस्करण-2014, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
5. काव्यालंकार सूत्राणि- हरगोविंद शास्त्री, पृ०- 5(भूमिका), संस्करण-2005 ई०, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी।
6. व्यक्ति विवेक –महिम भट्ट- रेवा प्रसाद द्विवेदी, पृ०-7-11(भूमिका), चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी।

डॉ. भारतेंदु कुमार पाठक

सहायक आचार्य

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

कश्मीर विश्विद्यालय हज़रतबल, श्रीनगर

दूरभाष- 7889760568

ई-मेल-pathakupandkashmir@gmail.com

डॉ. वनीत कौर

पूर्व शोध छात्रा, हिंदी विभाग

कश्मीर विश्विद्यालय हज़रतबल, श्रीनगर